Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2012-14

तीर्थधाम मङ्गलायतन का दसवाँ वार्षिक महोत्सव

# मङ्गलायतन अमृत महोत्सव

दिनांक 31 जनवरी से 06 फरवरी 2013

आत्मार्थी बन्धुवर,

सादर जयजिनेन्द्र!

वीतरागी जिनशासन की गौरवमयी परम्परा में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं तत्पथानुगामी बहिनश्री चम्पाबेन सहित समस्त धर्मात्माओं के प्रभावनायोग में निर्मित आपका अपना **तीर्थधाम मङ्गलायतन** अपनी स्थापना के दस वर्ष पूर्ण कर रहा है।

इस माङ्गलिक उपलक्ष्य में दिनांक **31 जनवरी से 06 फरवरी 2013** तक **मङ्गलायतन अमृत महोत्सव** के रूप में विशाल धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भक्तिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

इस पावन प्रसंग पर देश के ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ताओं के द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित जिनशासन के सनातन सत्य सिद्धान्तों को समझकर आत्मसात करने का यह अवसर अभी से अपने जीवन में निश्चित करने हेतु हमारा हार्दिक आमन्त्रण है। कृपया अवश्य पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ अर्जित करें।

निवेदक

**श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द-कहान-दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़**

**कुन्दकुन्द-प्रवचन-प्रसारण संस्थान, उज्जैन**

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़ - 202 001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan
Digamber Jain Trust
Harinagar, Agra Road, Aligarh-202 001

Ph. : 9997996346, 2410010/11; Fax : 2410019/22
info@mangalayatan.com; www.mangalayatan.com

R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2012-14

मूल्य-4 रुपये, वर्ष-11, अङ्क-12, दिसम्बर 2012

# मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ ( उ०प्र० ) का मासिक मुख समाचार पत्र

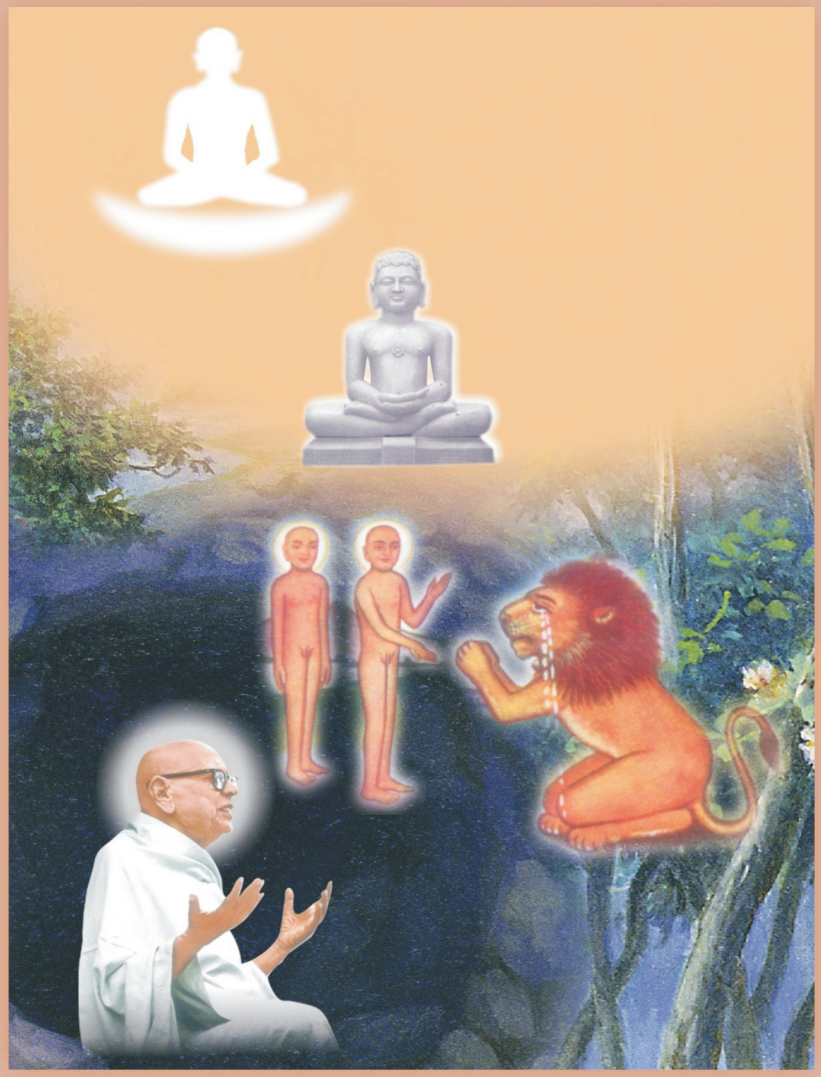

## जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व

विशेषाङ्क 17

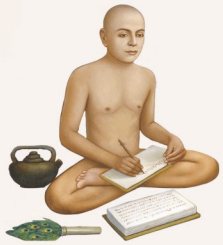

आगम महासागर में से संकलित

# वैराग्य-वाणी

11. जो वीर है उसे भी मरना पड़ता है तथा जो वीर नहीं है वह भी अवश्य मरता है। यदि वीर और कायर दोनों मरते ही हैं तो वीरता से अर्थात् संक्लेशरहित परिणामों से मरना ही श्रेष्ठ है। मैं शान्त परिणामी होकर प्राणों का त्याग करूँगा। *( मूलाचार )*

12. जिस जीव को जिस काल में जिस विधान से जन्म-मरण उपलक्षण से सुख-दु:ख-रोग-दरिद्रादि का होना सर्वज्ञदेव ने देखा है वह उसी प्रकार नियम से होना है और वह जिस प्रकार होने योग्य है उस प्राणी को उसी देश में उसी विधान से नियम से होता है, उसे इन्द्र या जिनेन्द्र-तीर्थंकरदेव भी रोक नहीं सकते। *( श्री स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा )*

13. अपने किसी सम्बन्धी पुरुष की मृत्यु होने पर जो अज्ञानवश शोक करता है उसके पास गुण की गन्ध भी नहीं है, परन्तु दोष उसके पास बहुत हैं-यह निश्चित है। उस शोक के कारण उसका दु:ख अधिक बढ़ता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप चारों पुरुषार्थ नष्ट होते हैं, बुद्धि में विपरीतता आती है, तथा पाप (आशातावेदनीय) कर्म का बन्ध भी होता है। रोग उत्पन्न होते हैं और अन्त में मृत्यु प्राप्त करके वह नरकादि दुर्गति प्राप्त करता है। इस प्रकार उसका संसार-परिभ्रमण बढ़ जाता है। *( श्री पद्मनन्दि पंचविंशति )*

14. हे शिष्य! जो कुछ पदार्थ सूर्य के उदय होने पर देखे थे वे सूर्य के अस्त होने के समय नहीं देखे जाते, नष्ट हो जाते हैं। इस कारण तू धर्म का पालन कर, धन और यौवन अवस्था में क्या तृष्णा कर रहा है! *( श्री परमात्मप्रकाश )*

15. जिनकी भौंह के कटाक्षों के प्रारम्भमात्र से ब्रह्मलोक पर्यन्त का यह जगत भयभीत हो जाता है, तथा जिनके चरणों के गुरुभार के कारण पृथ्वी के दबनेमात्र से पर्वत तत्काल खण्ड-खण्ड हो जाते हैं, ऐसे ऐसे सुभटों का भी, जिनकी कि अब कहानीमात्र ही सुनने में आती हैं, इस काल ने खा लिया है। फिर यह हीनबुद्धि जीव अपने जीने की बड़ी भारी आशा रखता है, यह कैसी बड़ी भूल है! *( श्री ज्ञानार्णव )*

16. मनुष्य समुद्र, पर्वत, देश और नदियों को लाँघ सकता है, परन्तु मृत्यु के निश्चित समय को देव भी निमिषमात्र (आँख की पलक जितना) किंचित् भी लाँघ नहीं सकता। इस कारण किसी इष्टजन की मृत्यु होने पर कौन बुद्धिमान मनुष्य सुखदायक कल्याणमार्ग छोड़कर सर्वत्र अपार दु:ख उत्पन्न करनेवाला शोक करेगा? अर्थात् कोई भी बुद्धिमान मनुष्य शोक नहीं करता। *( श्री पद्मनन्दि पंचविंशति )*

# ''किस मार्ग पर हूँ''

(पूज्य बहिनश्री द्वारा लिखित लेख)

'मैं किस मार्ग पर हूँ' वह मैं समझ नहीं सकती। आत्मा को अपने गुणदोष देखने का अभ्यास ही नहीं है। दूसरे के दोष देखने का जीव को अनादि काल से अभ्यास है। अगर किसी जीव को ऐसा पूछा जाय कि, 'फलाना व्यक्ति किस मार्ग पर है? वह बताओ' तो, जल्दी कह देता है। परन्तु कभी अन्तर में उतरकर विचार नहीं किया कि, 'मैं किस मार्ग पर हूँ?' यहाँ मेरी दशा ऐसी है कि - मुझे एक बार निवृत्ति लेनी है, खोज-खोजकर दोष निकालना है, मोक्ष का बीज प्राप्त करना है परन्तु कब करूँगी? एक बार... एक बार... एक दिन कहते-कहते सारी जिन्दगी तो नहीं चली जाएगी ना? यहाँ प्रमादावस्था है, उसके निमित्त मिलते, शिथिलता होने से, सत्यासत्य का विचार नहीं हो सकता। जिससे हृदय की गहराई में दु:ख होता है। थोड़े दिन पहले हृदय व्याकुल हो गया था और ऐसा होता था कि, हे जीव! तू सत्य कब खोजेगा? ऐसा विचार आने से दु:ख होता था परन्तु बुद्धि अल्प होने से, प्रमादावस्था होने से, सत्यासत्य का विचार कुछ स्फुरायमान नहीं हुआ, और उससे हृदय में व्याकुलता हुई, फिर दूसरा निमित्त मिलने से, आनन्दित हो गया, ऐसी समय-समय की स्थिति है।

मुझे सत्य प्राप्ति की खटक तो भीतर-भीतर रहती ही है, परन्तु वह यथार्थ वेदन होगा या भ्रान्तिरूप - वह मैं समझ नहीं सकती हूँ। हे प्रभु! मेरा यह वेदन भ्रान्तिरूप हो तो यथार्थ वेदन उत्पन्न कराओ, सत्य समझाओ।

यहाँ एकान्त सुहाता है। किसी को एकान्त दु:खदायक लगता है। मुझे तो एकान्त सुखदायक लगता है। सामान्य मानव के साथ मेरी दशा की तुलना करती हूँ तो, मात्र 'धर्म की रुचि हुई है' उतनी ऊँची है। ज्ञानी पुरुष के साथ मेरी दशा तुलना करने पर, 'मैं एक पामर पशु हूँ' ऐसा मुझे लगता है। बहुत बार आत्मा प्रमाद सहित हो जाता है।

यहाँ प्रमादावस्था है। कुछ महिने पहले मेरी दशा अभी की तुलना में ऊँची थी; आत्मा को पुरुषार्थ करने का सूझता था; कषायों को जीतता था। अभी प्रमाद है। अनेक बाद सत्यासत्य की उलझन के विकल्पों में यह जीव उलझ जाता है। ऐसी समय-समय की स्थिति है।●